भुवनेश्वर-ओडिशा। राज्यपाल महोदय गणेशी लाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लीना। साथ हैं ब्र.कु. बिजय, ब्र.कु. सबिता, बहन गायित्री, बहन संजुक्ता तथा अन्य।

करनाल-हरियाणा। माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेम।

दिल्ली-लॉरेन्स रोड। रोमेक्स इंटरनेशनल स्कूल की प्रिन्सीपल शालिनी भट्ट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सारिका तथा ब्र.कु. रूपलता।

साहिबाबाद-उ.प्र.। थानाध्यक्ष प्रशांत मिश्रा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. विद्या।

दिल्ली-पालम। रक्षाबंधन के अवसर पर थाने में पुलिसकर्मियों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सरोज।

कैंसर के अचूक उपाय स्वास्थ्य

वैज्ञानिकों ने ढूंढ निकाला कैंसर का सबसे सस्ता इलाज, 2 रुपए की ये चीज़ जड़ से ख़त्म कर देगी कैंसर....

कैंसर के मरीजों के लिए एक बड़ी राहत वाली खबर आई है। दुनिया भर के वैज्ञानिक जिस बीमारी के लिए सालों से इलाज ढूंढ़ रहे थे, उसका आखिरकार तोड़ मिल चुका है।

अब तक दुनिया भर में कैंसर के इलाज के लिए अरबों रुपए पानी की तरह बहा दिए गए हैं, लेकिन कोई भी दवा पूरी तरह से कैंसर को जड़ से खत्म करने में नाकाम साबित हुई है। अब तक बाज़ार में जो दवाएं मौजूद हैं, वो सिर्फ कैंसर को बढ़ने से रोक देती हैं, लेकिन उसे खत्म नहीं करतीं।

अमेरिका के लडविंग इंस्टीट्यूट फॉर कैंसर रिसर्च में अमेरिकी वैज्ञानिकों के दल ने हाल ही में कुछ नए शोध किए। इस टीम की अगुवाई मशहूर कैंसर वैज्ञानिक और जॉन हॉप्किंग यूनिवर्सिटी के ऑनकोलॉजिस्ट (कैंसर विशेषज्ञ) डॉ. ची. वान. डैंग ने की। उन्होंने कहा कि हम सालों तक रिसर्च कर चुके हैं और अब तक कैंसर के जो भी इलाज मौजूद हैं वो काफी महंगे हैं। हमने जो शोध किया उसमें चौंकाने वाले नतीजे सामने आए हैं। आपके किचन में रखा बेकिंग सोडा कैंसर के लिए रामबाण औषधि है।

डॉ. डैंग के मुताबिक हमने बेकिंग सोडा पर लंबी रिसर्च की और जो परिणाम हमने अब तक सिर्फ सुने थे वो प्रमाणित हो गए। उन्होंने बताया कि यदि कैंसर का मरीज बेकिंग सोडा पानी के साथ मिलाकर पी ले, तो कुछ ही दिनों में इसका असर दिखने लगेगा। उन्होंने बताया कि कीमोथेरेपी और महंगी दवाओं से भी तेज़ी से बेकिंग सोडा ट्यूमर सेल्स को न सिर्फ बढ़ने से रोकता है, बल्कि उसे खत्म कर देता है।

डॉ. डैंग ने पूरी जानकारी देते हुए बताया कि हमारे शरीर में हर सेकेंड में लाखों सेल्स खत्म होते हैं और नए सेल्स उनकी जगह ले लेते हैं। लेकिन कई बार नए सेल्स के अंदर खून का संचार रुक जाता है और ऐसे ही सेल्स एक साथ इकट्ठा हो जाते हैं, जो धीरे-धीरे बढ़ते हैं। इसी को ट्यूमर कहा जाता है। उन्होंने बताया कि हमने ब्रेस्ट और कोलोन कैंसर के ट्यूमर सेल्स पर बेकिंग सोडा के प्रभाव की जांच की और हमने पाया कि बेकिंग सोडा वाला पानी पीने के बाद जिस तेज़ी से ट्यूमर सेल्स बढ़ रहे हैं तो वो काफी हद तक रुक गए।

उन्होंने बताया कि ट्यूमर सेल्स में ऑक्सिजन पूरी तरह खत्म हो जाती है तो उसे मेडिकल भाषा में हिपोक्सिया कहते हैं। हिपोक्सिया की वजह से तेज़ी से उस हिस्से का पी एच लेवल गिरने लगता है और ट्यूमर के ये सेल एसिड बनाने लगते हैं। इस एसिड की वजह से पूरे शरीर में भयंकर दर्द शुरू हो जाता है। अगर इन सेल्स का तुरंत इलाज न किया जाए तो ये कैंसर सेल्स में तब्दील हो जाते हैं। डॉ. डैंग के मुताबिक बेकिंग सोडा मिला पानी पीने से शरीर का पी.एच. लेवल भी मेंटेन रहता है और एसिड वाली समस्या न के बराबर होती है। डॉ. डैंग ने बताया कि कई बार कीमोथैरेपी के बावजूद भी ऐसे कैंसर सेल्स शरीर में रह जाते हैं, जो बाद में दुबारा से शरीर में कैंसर सेल्स बनाने लगते हैं। इन्हें टी सेल्स कहते हैं। इन टी सेल्स को नाकाम सिर्फ बेकिंग सोडा से ही किया जा सकता है।

डॉ. वॉन डैंग ने कहा कि पहले भी ये बात आप सुन चुके होंगे कि बेकिंग सोडा कैंसर समेत कई बीमारियों का इलाज है। लेकिन अब हम प्रमाणिक तौर पर कह सकते हैं कि कैंसर का सबसे सस्ता और अच्छा इलाज बेकिंग सोडा से मिला पानी है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों पर हमने प्रयोग किए उन्हें दो हफ्तों तक पानी में बेकिंग सोडा मिलाकर दिया और सिर्फ 2 हफ्ते में उन लोगों के ट्यूमर सेल्स लगभग खत्म हो गए।

इसकी विधिः

एक चम्मच बेकिंग सोडा, एक गिलास पानी में मिलाकर रोज़ सुबह शाम खाली पेट, एक महीने तक लें। उससे अधिक नहीं।

हर आत्मा अपनी अपनी यात्रा पर

गतांक से आगे ...

कोई भी आत्मा अपनी यात्रा पर हर समय चल रही है। हमें नहीं पता ये आत्मा कितने सालों से अपनी यात्रा कर रही है। लेकिन आज हम सिर्फ यह देखते हैं कि ये मेरा बच्चा मेरे घर में आया है। हमें ये नहीं पता कि इसने पिछले समय में क्या क्या किया। इसके पहले ये कहाँ था। इसके बाद कहाँ होंगे, कहीं और। इतना हमारा इकट्ठा है सिर्फ। अब जो इतना समय है 100 साल का जो हम इकट्ठे हैं तो हमें एक दूसरे के संस्कारों को रिजेक्ट नहीं करना, एक दूसरे के संस्कारों को समझना है कि इस आत्मा के साथ कभी न कभी कुछ हुआ होगा ना, तब उसके पास ये वाला संस्कार है। अब मेरा रोल एक फैमिली मेम्बर की तरह क्या है? उसको एक नया संस्कार क्रियेट करने में सहयोग देना लेकिन नया संस्कार क्रियेट करने से पहले मुझे उसको प्यार देना होगा, सम्मान देना पड़ेगा, शक्ति देनी पड़ेगी और उसके मुझे प्रेज़ेंट संस्कार को क्रिटीसाइज़ करना, रिजेक्ट करना नहीं है। गलत संस्कार लेकर आया है और हम उसकी निंदा करके-करके, उसका मज़ाक उड़ा-उड़ा के उसके वो संस्कार क्या कर देते हैं। कुछ बच्चों को पानी से डर लगता है, कुछ बच्चों को हाइट से डर लगता है, कुछ बच्चों को किसी जानवर से डर लगता है। छोटी-छोटी चीज़ें, पेरेंट्स को समझ में नहीं आती कि इनको ऐसे डर क्यों लगता है? अब पेरेंट्स उसको क्या बोलने लग जाते हैं। तुम तो बड़े डरपोक हो। और एक बार पेरेंट ने बोल दिया कि तुम डरपोक हो, आस पास के लोग भी बोलना शुरू कर देते कि तुम तो डरपोक हो। फिर वो बच्चा स्कूल गया, फ्रेंड्स ने कहा कि बड़े डरपोक हो। फिर लोगों ने क्या किया मज़ाक भी उड़ाया, निंदा भी की, उसके पास ऑलरेडी डर का संस्कार था, क्यों था क्योंकि कभी न कभी कुछ हुआ होगा। लेकिन उसका मज़ाक उड़ाया, उसकी निंदा की तो उसका वो डर का संस्कार क्या हो जायेगा? और बढ़ जायेगा। और क्या किया उसको दूसरे बच्चों के साथ कम्पेयर किया, उनको देखो

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

वो कोई डरते हैं! तुम डरते हो।

ये संस्कार हमारे साथ भी तो चल रहे हैं ना। हमें भी तो माता पिता ने ऐसे ही पाला है। उनके द्वारा हमें जो संस्कार मिले और हमारे जो संस्कार उन्हें दिखे, उन दोनों का कोई कम्पैरिज़न नहीं है। एक तो हम पूर्व जन्मों से लेकर आये और दूसरा माता पिता ने हमको दिया। तो किस संस्कार से हमें डर लग रहा है, ये हमें पता नहीं चल रहा है। इसलिए अगर हम बच्चे की किसी और से तुलना करते हैं तो बच्चा और नर्वस होता चला जायेगा। आप इसको उदाहरण के रूप में देख भी सकते हैं कि जब किसी बच्चे का मज़ाक उड़ाया जाता है तो बच्चा अगर ऐसे संस्कार वाला होगा तो वो सहम जाता है, और उसके अंदर ऐसे संस्कार और ज़्यादा भरते चले जाते हैं। इसलिए बच्चे को बूस्ट करना चाहिए, ना कि उनके अंदर वही वाले संस्कार और ज़्यादा पनपने देना चाहिए। उसको निकालने के लिए माता पिता को भरसक प्रयास करना चाहिए। - क्रमशः

पटना सिटी-गायघाट। मेयर श्रीमति सीता साहू को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. अर्चना, ब्र.कु. मनीष तथा ब्र.कु. चंचल भाई।

अखनूर-जम्मू। विधायक राजीव शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा।

कानपुर-बर्रा। युनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेस के वाइस चांसलर प्रो. डॉ. राजकुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निधि तथा ब्र.कु. तेजस्विनी।

भद्रक-ओडिशा। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर कलेक्टर ज्ञान दास जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. रत्नप्रभा।

सीकर-राज.। कच्ची बस्ती में आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान बस्ती वालों के साथ रक्षाबंधन उत्सव मनाते हुए ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।